5

प्राथमिक शिक्षा में मातृभाषा माध्यम का शैक्षिक निहितार्थ

कुलदीप कुमार पाण्डेय*
ज्ञानेंद्र कुमार**

बच्चे अपने घर की भाषा तथा आस-पास के वातावरण की भाषा से अपनी बुनियादी समझ विकसित करते हैं और इसी समझ के साथ वे विद्यालय में आते हैं। जिस भाषा में उनके द्वारा बुनियादी समझ को विकसित किया गया है, यदि वह विद्यालय की भाषा से मेल नहीं खाती तो उनमें आत्मविश्वास की कमी आने लगती है, क्योंकि बच्चे मातृ/स्थानिक भाषा में आसानी से बातों को समझ व विचारों को अभिव्यक्त कर सकते हैं। प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा प्रदान करना न केवल बच्चों के संज्ञानात्मक, सामाजिक और भावनात्मक विकास को बढ़ावा देता है, बल्कि यह उनकी सांस्कृतिक पहचान को भी मजबूत करता है। किसी भी तकनीकी नवाचार, शोध व सामाजिक प्रगति के बारे में सोचना तभी संभव है जब हम अपनी भाषा में सोच और समझ पाएँगे। मौलिक रूप से सोचने में अपनी भाषा सबसे महत्वपूर्ण कारक हो सकती है। अतः घर की भाषा व विद्यालय की भाषा के मध्य एक सेतु होना चाहिए जिससे बच्चों के मौलिक विचार संप्रेषित हो सकें। इसके महत्व को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) में मातृभाषा के प्रयोग से विद्यार्थियों को समावेशी एवं प्रभावी शिक्षण-अनुभव प्रदान करने पर जोर दिया गया है। मातृभाषा बच्चों की सांस्कृतिक पहचान के साथ-साथ, उनके संज्ञानात्मक विकास में किस प्रकार से अपनी भूमिका का निर्वहन करती है? क्या मातृभाषा शिक्षण माध्यम से बच्चों में सामाजिक समता की भावना का विकास संभव है? एक शिक्षक द्वारा शिक्षण के माध्यम के रूप में मातृभाषा का प्रयोग करने से क्या बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि में सुधार किया जा सकता है? इसके साथ यह भी महत्त्वपूर्ण है कि क्या मातृभाषा में शिक्षण से बालक में अस्मिता बोध को सुदृढ़ किया जा सकता है, जिससे वह अपनी सांस्कृतिक विरासत से न केवल जुड़े, वरन संस्कृति के हस्तांतरण में भी अपनी भूमिका का सजगता से निर्वहन करें। प्रस्तुत शोध आलेख में शोधकर्ताओं द्वारा उक्त सभी प्रश्नों पर गहनता से विचार किया गया है।

*एम.एड. विद्यार्थी, शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय 110 007
***सहायक आचार्य,* शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय 110 007

भाषा और समझ के बीच गहरा संबंध है। भाषा के बिना समझ की परिकल्पना करना असंभव है। बच्चे जब घर से विद्यालय आते हैं तो अपने साथ समझ का एक भंडार लाते हैं जिसे उन्होंने अपने वातावरण की भाषा से अर्जित किया है। उनकी इस भाषा को विद्यालय में यदि समझ का माध्यम बनाया जाए तो यह बच्चों के सर्वांगीण विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। पर भारत जैसे भाषायी विविधता वाले देश में जहाँ 1971 की जनगणना के अनुसार हमारे देश में 1652 भाषाएँ हैं, उनमें केवल 47 भाषाएँ ही विद्यालय की समझ का माध्यम बन सकी हैं (*भारतीय भाषाओं का शिक्षण, 2005*)। भारत अपनी इसी समृद्ध भाषायी और सांस्कृतिक विविधता के लिए प्रसिद्ध है। इस भाषायी बहुलता का प्रभाव शिक्षा प्रणाली पर भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है, विशेष रूप से प्राथमिक शिक्षा के माध्यम के संदर्भ में। बच्चों को उनकी भाषा के माध्यम से शिक्षा प्रदान करना किसी भी राष्ट्र का सर्वप्रमुख कर्तव्य होता है, क्योंकि बच्चे अपनी समझ अपनी मातृभाषा में ही बनाते हैं और अपने अनुभवों की अभिव्यक्ति भी इसी भाषा में करते हैं। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी, मातृभाषा-आधारित शिक्षा की प्रभावशीलता को व्यापक रूप से स्वीकार किया गया है। अनेक राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय शोधकार्यों ने यह दर्शाया है कि मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि बेहतर होती है और वे विद्यालय छोड़ने की प्रवृत्ति में कमी दिखाते हैं। इसके महत्व को रेखांकित करते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुच्छेद 4.11 में वर्णित किया गया कि 'यह सर्वविदित है कि छोटे बच्चे घर की भाषा या मातृभाषा में सार्थक अवधारणाओं को अधिक तेजी से सीखते हैं और समझ लेते हैं। विज्ञान सहित सभी विषयों में उच्चतर गुणवत्ता वाली पाठ्यपुस्तकों को घरेलू भाषाओं/मातृभाषा में उपलब्ध कराया जाएगा। यह सुनिश्चित करने के लिए सभी प्रयास जल्दी किए जाएँगे कि बच्चे द्वारा बोली जाने वाली भाषा और शिक्षण के माध्यम के बीच यदि कोई अंतराल मौजूद हो तो उसे समाप्त किया जा सके। ऐसे मामलों में जहाँ घर की भाषा की पाठ्यसामग्री उपलब्ध नहीं है, शिक्षकों और छात्रों के बीच संवाद की भाषा भी जहाँ संभव हो, वहाँ घर की भाषा बनी रहेगी।' अतः इस बात को आजादी के बाद से ही लगभग सभी शैक्षिक दस्तावेजों में मातृभाषा को समझ के माध्यम, विशेष रूप से प्राथमिक स्तर पर लागू करने की बात की गई और बच्चों की समझ में सहायक उनकी अपनी भाषा, उनकी स्वतंत्र अभिव्यक्ति को महत्व दिया गया (*समझ का माध्यम,* पृष्ठ 2)।

मातृभाषा की अवधारणा

मातृभाषा के अर्थ उसके शाब्दिक अर्थ— माँ से ग्रहण की हुई भाषा से ले सकते हैं। अतः घर-परिवार में व्यवहृत होने वाली भाषा को मातृभाषा के नाम से पुकारा जाता है। जिस भाषा का व्यवहार बालक के माता-पिता तथा अन्य पारिवारिक सदस्य करते हैं, वही भाषा वह सहज भाव से सीखता जाता है (छत्रिया, के. 1968)। मातृभाषा शब्द को मुख्य रूप से उस पहली भाषा के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसे कोई व्यक्ति जन्म से सीखता है, जिसे अक्सर 'मूल भाषा' या 'पहली भाषा' के समानार्थी माना जाता है। यह भाषा प्रारंभिक संज्ञानात्मक और भाषायी विकास

में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है (स्कूटनैब-कैंगास, 1984)। मातृभाषा वक्ता की पहली और वास्तविक भाषा है, जो सच्चे स्व के लिए पारदर्शी है (वूलार्ड, 1998, पृष्ठ 18)। अग्निहोत्री और खन्ना (2016) के द्वारा मातृभाषा का प्रयोग बच्चे के विद्यालय आने से पहले घर, पड़ोस एवं साथियों की भाषा के रूप में किया गया है। यह वह भाषा है जो जन्म से ही बच्चे की दुनिया, संस्कृति और भावनात्मक विकास की समझ को आकार देती है। अपने अध्ययन में इसी बात का समर्थन करते हुए मोयो (2009); टैकी-ओफोसु और अन्य (2015); तथा निशांति (2020) लिखते हैं कि मातृभाषा से तात्पर्य उस पहली भाषा से भी है जिसे बच्चा स्कूल जाने से पहले घर पर सीखता है और प्रयोग करता है। बॉल (2011), मातृभाषा की कई परिभाषाएँ देते हैं— वह भाषा जिसे व्यक्ति ने सबसे पहले सीखा है, वह भाषा जिसे कोई अन्य व्यक्ति मूल वक्ता के रूप में पहचानता है, वह भाषा जिसे व्यक्ति सबसे अच्छी तरह जानता है और वह भाषा जिसका व्यक्ति सबसे अधिक उपयोग करता है। भारतीय भाषाओं का शिक्षण, राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र (2009) में भी इसी संदर्भ में लिखा गया कि "यहाँ मातृभाषा का प्रयोग उन भाषाओं के लिए किया गया है जिन्हें बच्चा स्कूल आने से पहले सीखता है। इसमें घर, पड़ोस और साथियों की भाषा शामिल है (पृ.सं.19)।

प्राथमिक स्तर पर शिक्षण माध्यम के रूप में मातृभाषा का महत्व

अनौपचारिक शिक्षा जन्म से ही जारी रहती है, बच्चे अपने परिवेश से ज्ञान प्राप्त करते रहते हैं। इसी तरह, बच्चे के जन्म के साथ ही मातृभाषा का अधिग्रहण प्रारंभ हो जाता है, जिसे वह सहज रूप से अर्जित करते हैं। मातृभाषा सीखना स्वाभाविक रूप से होता है, लेकिन पढ़ने-लिखने का कौशल औपचारिक शिक्षा के माध्यम से विकसित होता है। मातृभाषा का (अधिग्रहण) मुख्य रूप से उसके सामाजिक परिवेश से प्रभावित होता है। बच्चे अपनी घर की भाषा में सहज भाव से ही अनेक संप्रत्ययों को सीख लेते हैं जिसके साथ वे विद्यालय जाते हैं, जिसे वे उसी भाषा में आसानी से अभिव्यक्त कर पाते हैं। यदि उनके विद्यालय की भाषा और घर की भाषा में विभेद नहीं होता है तो यह स्थिति उन्हें नई जटिल संक्रियाएँ समझने में सहयोग करती है। जिसे राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (अध्याय 4.11) में बताया गया है कि छोटे बच्चे अपनी मातृभाषा में जटिल विचारों को अधिक आसानी से समझते हैं, क्योंकि यह उनके स्थानीय समुदाय में बोली जाती है। शिक्षा की भाषा और बच्चे द्वारा बोली जाने वाली भाषा के बीच अंतर को कम करने की आवश्यकता पर जोर दिया जाना चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 यह भी बताती है कि यदि पाठ्यपुस्तकें मातृभाषा में उपलब्ध न हों, तब भी शिक्षकों को संवाद के लिए इसे प्राथमिकता देनी चाहिए। कोठारी आयोग (1964–1966) ने भी शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा की महत्वपूर्ण भूमिका को विशेषकर प्राथमिक स्तर पर स्वीकार करते हुए लिखा कि "हमारा विश्वास है कि अंग्रेजी जैसी विदेशी भाषा सीखने से पहले मातृभाषा पर पर्याप्त अधिकार हासिल कर लेना चाहिए"। इसी रिपोर्ट में रवींद्रनाथ टैगोर के कलकत्ता विश्वविद्यालय में दिए

गए भाषण को रेखांकित करते हुए लिखा गया जिसमें उन्होंने शिक्षा की भाषा को विद्यार्थी की मातृभाषा से अलग रखने की आलोचना की थी। उन्होंने कहा कि विदेशी भाषा में पढ़ाई करने से विद्यार्थी विषय को गहराई से समझने के बजाय रटने पर अधिक ध्यान देते हैं। मातृभाषा शिक्षा बच्चों के संज्ञानात्मक विकास, सांस्कृतिक जुड़ाव और आत्मविश्वास को बढ़ाती है। यह भाषा विद्यार्थियों को प्रभावी रूप से ज्ञान अर्जित करने, विचारों को स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त करने और तार्किक सोचने में सहायता करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में त्रि-भाषा सूत्र की पृष्ठभूमि को राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) में विद्यालय में पहली भाषा मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा होने पर जोर दिया गया (*समझ का माध्यम*, पृष्ठ सं. 3)। हालाँकि, इसके क्रियान्वयन में संसाधनों की उपलब्धता और शिक्षक प्रशिक्षण जैसी चुनौतियाँ बनी हुई हैं। फिर भी, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम जैसी पहलें इसे समावेशी और समान शिक्षा का साधन बना सकती हैं।

विभिन्न शोध दर्शाते हैं कि बच्चे सबसे बेहतर तब सीखते हैं जब उन्हें उनकी मातृभाषा में पढ़ाया जाता है। यह न केवल बुनियादी अवधारणाओं को समझने में मदद करता है, बल्कि संज्ञानात्मक कौशल को भी मजबूत करता है। मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी विभिन्न पाठों को अधिक स्पष्ट रूप से समझते हैं, अपनी सोच को व्यक्त करने में सक्षम होते हैं और सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। इसके अलावा, यह शिक्षार्थियों की आलोचनात्मक सोच और समस्या-समाधान क्षमताओं को विकसित करने में सहायक होता है। कमिंस (1981) के भाषा हस्तांतरण सिद्धांत के अनुसार, पहली भाषा में दक्षता दूसरी भाषा सीखने में मदद करती है, जिससे बहुभाषी शिक्षा आसान और प्रभावी हो जाती है। इसके अतिरिक्त, मातृभाषा शिक्षा, बच्चों में सांस्कृतिक गर्व और पहचान की भावना को भी बढ़ावा देती है, जो उनके सामाजिक और भावनात्मक विकास के लिए आवश्यक है। महात्मा गाँधी का शैक्षिक दर्शन मातृभाषा में शिक्षा की वकालत करता है, जिससे शिक्षा अधिक प्रभावी और सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक बनती है। उन्होंने तर्क दिया कि मातृभाषा में शिक्षा से बच्चे स्वयं को बेहतर अभिव्यक्त कर सकते हैं और नैतिक मूल्यों को अधिक गहराई से आत्मसात कर सकते हैं। गांधी जी की 'बुनियादी शिक्षा' की अवधारणा भी इस बात को रेखांकित करती है कि प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा में होनी चाहिए, ताकि बच्चे का समग्र विकास सहज रूप से हो सके (शाह, 2017)। मातृभाषा में शिक्षा व्यक्ति को न केवल संज्ञानात्मक रूप से जोड़ती है, अपितु उसे सामाजिक व भावनात्मक रूप से अपनी संस्कृति से जुड़ा हुआ महसूस कराती है। यह अकारण ही नहीं कि महात्मा गाँधी ने आज से सौ साल पहले (सन 1990 में) 'हिन्द स्वराज' अपनी मातृभाषा गुजराती में लिखी, अंग्रेजी में नहीं। सिन्हा (1939) ने वर्धा शिक्षा योजना (1937) जिसे बेसिक शिक्षा योजना के नाम से भी जाना जाता है, को रेखांकित करते हुए लिखा कि प्राथमिक स्तर पर शिक्षा माध्यम के रूप में मातृभाषा के उपयोग पर महत्वपूर्ण जोर दिया। वर्धा में आयोजित अखिल भारतीय राष्ट्रीय

शिक्षा सम्मेलन के बाद तैयार की गई इस योजना ने ऐसी शिक्षा की जोरदार वकालत की, जो एक ऐसे वातावरण में बच्चे के विकास को बढ़ावा दे जो परिचित और सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक हो। वर्धा योजना में कहा गया है "प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा के माध्यम से दी जानी चाहिए" (सिन्हा, पृष्ठ 729)। यह पंक्ति वर्धा योजना के मूल सिद्धांत को संक्षेप में बताती है, जो बच्चों को उनकी मूल भाषाओं में शिक्षित करने के महत्व को रेखांकित करती है। गाँधी जी का मानना था कि मातृभाषा में सीखने से न केवल शिक्षा अधिक सुलभ होती है बल्कि बच्चों को अपनी संस्कृति और पर्यावरण से अधिक गहराई से जुड़ने में भी मदद मिलती है। इस योजना ने इस बात पर भी जोर दिया कि बच्चे के समग्र बौद्धिक और भावनात्मक विकास के लिए मातृभाषा का उपयोग महत्वपूर्ण है।

संज्ञानात्मक विकास में मातृभाषा

मातृभाषा के अर्थ को समझने के बाद मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में शिक्षा में इसकी भूमिका को समझना आसान हो जाता है। कई मनोवैज्ञानिक सिद्धांत प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा के उपयोग के महत्व पर जोर देते हैं, खासकर बच्चों में संज्ञानात्मक, भावनात्मक और सामाजिक विकास को बढ़ावा देने में।

वायगोत्स्की (1978) ने अपनी पुस्तक माइंड इन सोसाइटी : द डेवलपमेंट ऑफ हायर साइकोलॉजिकल प्रोसेस में संज्ञानात्मक विकास का सिद्धांत सीखने और विकास में भाषा की केंद्रीय भूमिका को रेखांकित किया है। वायगोत्स्की ने कहा कि सामाजिक संपर्क, संज्ञानात्मक विकास के लिए मौलिक है और सामाजिक संपर्क भाषा के बिना असंभव है अतः वायगोत्स्की के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत में वातावरण की भूमिका में भाषा स्वतः ही अंतर्निहित है। मातृभाषा एक माध्यम के रूप में कार्य करती है जिसके माध्यम से बच्चे सांस्कृतिक मानदंडों, मूल्यों और ज्ञान को आत्मसात करते हैं। अपनी पहली भाषा में सीखने से, बच्चे नई जानकारी को अपने मौजूदा संज्ञानात्मक ढाँचे से जोड़ सकते हैं। वायगोत्स्की के अनुसार, निकटतम विकास का क्षेत्र (जेड.पी.डी.), बच्चों द्वारा स्वतंत्र रूप से किए जा सकने वाले कार्य और मार्गदर्शन के साथ प्राप्त किए जा सकने वाले कार्यों के बीच का अंतर है। इसे बच्चे की अपनी भाषा का उपयोग करके सबसे अच्छी तरह से पाटा जा सकता है। वायगोत्स्की के समीपस्थ विकास के क्षेत्र की धारणा ने भाषा शिक्षण के बाल-केंद्रित दृष्टिकोण को आगे बढ़ाया है (भारतीय भाषाओं का शिक्षण, *राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र*, पृष्ठ 12)। यदि किसी बच्चे को विदेशी भाषा में निर्देश मिलता है, तो यह इस सीखने की प्रक्रिया में पूरी तरह से शामिल होने की उनकी क्षमता में बाधा डाल सकता है, क्योंकि भाषा की बाधा संज्ञानात्मक अधिभार पैदा करती है। अपनी स्वयं की भाषा का उपयोग करके, बच्चे ज्ञान को अधिक प्रभावी ढंग से अवशोषित और लागू करने में सक्षम होते हैं, जिससे गहरी समझ और आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा मिलता है। बच्चे की मूल भाषा का उपयोग उन्हें अनुवाद करने के बजाय सीखने पर ध्यान केंद्रित करने में सक्षम बनाता है, जिससे समग्र संज्ञानात्मक विकास में वृद्धि होती है।

जीन पियाजे (1954) की पुस्तक द *कंस्ट्रक्शन ऑफ रियलिटी इन द चाइल्ड* में संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत में उन चरणों पर प्रकाश डाला गया है, जिनसे बच्चे तर्क करना और दुनिया को समझना सीखते हैं। पूर्व-संक्रियात्मक चरण (आयु 2–7) और मूर्त संक्रियात्मक चरण (आयु 7–11) में, बच्चे परिचित अवधारणाओं और भाषा के माध्यम से सबसे अच्छा सीखते हैं। पियाजे ने स्कीमा या मानसिक संरचनाओं के महत्व पर जोर दिया, जो बच्चों को जानकारी संशोधित करने और वर्गीकृत करने में मदद करती हैं। यद्यपि पियाजे ने मातृभाषा का कहीं स्पष्ट उल्लेख नहीं किया, परंतु मातृभाषा में सीखने से बच्चों को इन पहले से मौजूद स्कीमा पर निर्माण करने की अनुमति मिलती है, जिससे नई जानकारी को एकीकृत करना आसान हो जाता है। यदि उन्हें अपनी पहली भाषा की अवधारणाओं में महारत हासिल करने से पहले दूसरी भाषा में शिक्षा दी जाती है, तो यह उनके संज्ञानात्मक विकास को बाधित कर सकता है। मातृभाषा बच्चे की संज्ञानात्मक प्रक्रिया का एक स्वाभाविक विस्तार है और इसे शिक्षण की भाषा के रूप में उपयोग करने से ठोस और अमूर्त सोच के बीच एक सहज संक्रमण की अनुमति मिलती है।

नाम चॉम्स्की (1957) ने सार्वभौमिक व्याकरण का सिद्धांत प्रतिपादित किया उन्होंने अपनी पुस्तक *सिनटेक्टिक स्ट्रक्चर्स* में बताया कि सभी मनुष्य भाषा सीखने की जन्मजात क्षमता के साथ पैदा होते हैं (पृष्ठ 13) जबकि यह क्षमता सभी भाषाओं पर लागू होती है। बच्चे की प्राकृतिक भाषायी प्रवृत्तियों को सबसे अच्छा समर्थन तब मिलता है जब शिक्षा प्रथम भाषा में शुरू होती है, क्योंकि यह उनकी जन्मजात भाषायी संरचनाओं के साथ संरेखित होती है।

शैक्षिक उपलब्धि में मातृभाषा

एक बच्चे की दुनिया को समझने की पहली झलक, उसकी अवधारणाओं और कौशलों का विकास और उसके अस्तित्व की धारणा उसकी मातृभाषा के माध्यम से ही आकार लेती है। यही भाषा वह सबसे पहले सीखता है और इसी के माध्यम से वह अपनी शुरुआती भावनाएँ, जैसे खुशी, भय और अपने पहले शब्द व्यक्त करता है। मातृभाषा हमारी सोच और भावनाओं को अत्यंत गहराई तक प्रभावित करती है क्योंकि जीवन का सबसे महत्वपूर्ण दौर— बचपन, इसी भाषा की छाप के साथ बीतता है। प्रायः सभी मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों ने इस बात पर सहमति व्यक्त की है कि घर की भाषा अथवा वातावरण की भाषा बच्चों के संज्ञानात्मक, भावनात्मक और बौद्धिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। बच्चे सहज भाव से ज्ञानार्जन करते हैं तथा मातृभाषा इस प्रक्रिया का मूल होती है, जिससे उनकी शिक्षा का आधार मजबूत होता है। निशांति (2020) अपने अध्ययन में लिखते हैं कि 'यदि कोई छात्र अपनी मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करता है, तो उसकी शैक्षिक उपलब्धि का अनुपात उस छात्र की तुलना में अधिक होता है जिसे अपनी मातृभाषा के अलावा किसी अन्य माध्यम में शिक्षा दी जाती है'। बच्चों के मस्तिष्क में उनकी अपनी भाषा की संरचना पहले से मौजूद होती है, जो उनकी अवधारणाओं का आधार बनाती है। जब वे किसी नई चीज का सामना करते हैं, तो वे उसे अपने पूर्व-अनुभवों से जोड़ते हैं अथवा उसकी नई

विशेषताओं को पहचानते हैं, जिससे उनकी समझ विकसित होती है। इसलिए, उनके लिए यह जरूरी है कि वे अपनी पहले से सीखी गई और नई अवधारणाओं को अलग-अलग परिस्थितियों में प्रयोग करने का अवसर प्राप्त करें, ताकि वे चीजों को गहराई से समझ सकें और अपनी स्वतंत्र सोच विकसित कर सकें। मान्योनी और अन्य (2016) ने अपने अध्ययन में केन्या के प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा के उपयोग पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर शिक्षकों के दृष्टिकोण जानने का प्रयास किया। इस अध्ययन में आधे से अधिक शिक्षकों ने मातृभाषा शिक्षण माध्यम से प्राथमिक स्तर पर बच्चों के शैक्षिक प्रदर्शन पर सकारात्मक प्रभाव को स्वीकृत किया। अतः यह स्पष्ट है कि बच्चों को अपनी भाषा में कोई चीज अच्छे से समझ आती है जो इनके संज्ञानात्मक विकास से सीधा जुड़ा है। ट्रुजिलो (2020) के द्वारा फिलीपींस के एक शहर में लगातार तीन शैक्षणिक वर्षों तक शिक्षण के माध्यम के रूप में मातृभाषा के उपयोग का विद्यार्थियों के प्रदर्शन पर प्रभाव को देखने के लिए किए गए अध्ययन के निष्कर्षों से स्पष्ट हुआ कि इन तीन वर्षों के दौरान मातृभाषा के उपयोग से विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक क्षमताओं, मोटर कौशल और भावनात्मक विकास में सकारात्मक सुधार देखा गया। अतः मातृभाषा शिक्षण माध्यम बच्चों के शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मक भूमिका निभाता है, क्योंकि मातृभाषा या आस-पास की भाषा में उच्च दक्षता का स्तर बेहतर संज्ञानात्मक विकास व सिद्धांतिक-स्पष्टता को बढ़ावा देता है (भारतीय भाषाओं का शिक्षण, *राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र*, पृष्ठ 31)।

मातृभाषा व सामाजिक समता

भाषा और सामुदायिक जीवन एक दूसरे से अत्यंत गहरे रूप से जुड़े हुए हैं, क्योंकि सृजित विचारों को भाषा के माध्यम से ही अभिव्यक्त किया जा सकता है। यदि यह भाषा स्व की भाषा हो तो यह अंतरक्रिया अत्यंत सुगम हो जाती है। बच्चा वातावरण से अपने अनुभवों को अर्जित करता है तथा उसे भाषा के माध्यम से संजोकर अर्थवान बनाता है। यह प्रक्रिया वह अपनी मूल भाषा में ही कर सकता है, क्योंकि बच्चा सर्वप्रथम अपनी भावनाओं को इसी भाषा में व्यक्त कर पता है। वह सहज भाव से ही अपने परिवेश से ज्ञानार्जन करना तथा उसे अपनी भाषा में अभिव्यक्त करना सीख लेता है। बच्चा इन्हीं पूर्व अनुभवों के साथ पहली बार जब विद्यालय जाता है जिसे उसने अपनी भाषा में पारिवारिक वातावरण में सीखा है, तो उसे विद्यालय में सिखाया जाता है कि उसे एक नई भाषा में बोलना है जो शिक्षकों द्वारा विद्यालय की भाषा के रूप में निर्धारित की गई है। यह भाषा उसके लिए बिल्कुल नई होती है जो उसके पूर्व अनुभवों से बिल्कुल भी मेल नहीं खाती है। "भारतीय भाषाओं का शिक्षण, *राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र*, पृष्ठ 27।" हमें ध्यान देना चाहिए कि बच्चा स्वयं को अपनी मूल भाषा में ही सर्जित करता है तथा उसी में वह अपने आप को सहजता से अभिव्यक्त करता है। इसको शिक्षा में नकारना केवल बच्चे को नकारना नहीं है, बल्कि यह सामाजिक समता, सामाजिक न्याय और आजादी को नकारना है (*समझ का माध्यम*, पृष्ठ 11)। मातृभाषा बच्चों को उनके सांस्कृतिक और सामाजिक मूल्यों को आत्मसात करने में भी मदद करती है, जिससे उनकी

सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक बंधन मजबूत होते हैं। बच्चे अपने आस-पास के परिवेश से दुनिया की एक समझ विकसित करते हैं जिसके साथ वो विद्यालय आते हैं। विद्यालय में उनके घर की भाषा को नकारने का अर्थ है उनके समझ के आधार को नकारना। इससे बच्चा अपने वातावरण द्वारा सृजित अनुभवों को सहजता से अभिव्यक्त नहीं कर पाता है जिससे यह प्रवृत्ति 'चुप्पी की संस्कृति' को जन्म देती है। हमारी शिक्षा पद्धति में कुछ भाषाओं में संसाधन उपलब्ध हैं तथा कुछ भाषाएँ इससे वंचित हैं। कुछ भाषाओं में शिक्षा की पहुँच न होना उसमें ज्ञानार्जन के उपकरण का न होना है। अतः हमें चिंतनशील समाज बनाने जिसमें नवीन शोध तथा तकनीकी उपकरण का विकास हो, के लिए मौलिक रूप से सोचना होगा जो कि अपनी मूल भाषा में ही संभव है।

मातृभाषा शिक्षण माध्यम में चुनौतियाँ

भारत में प्राथमिक शिक्षा के लिए मातृभाषा को माध्यम बनाने की राह में कई चुनौतियाँ हैं। सबसे प्रमुख चुनौती बहुभाषीयता की है, जहाँ विभिन्न भाषायी पृष्ठभूमियों के कारण शिक्षण की एकल भाषा निर्धारित करना कठिन हो जाता है। सरकारी नीतियों की असंगति भी एक बड़ी बाधा है। हालाँकि, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा शिक्षण को बढ़ावा दिया है। शैक्षिक नीतियों में अस्थिरता भी अभिभावकों और शिक्षकों के लिए चिंता का विषय बनी हुई है। इसके अतिरिक्त, अभिभावकों का नकारात्मक दृष्टिकोण भी एक महत्वपूर्ण चुनौती है। कई माता-पिता अंग्रेजी को सामाजिक और आर्थिक प्रगति की भाषा मानते हैं और इस डर से मातृभाषा शिक्षण का विरोध करते हैं कि उनके बच्चे वैश्विक प्रतिस्पर्धा में पीछे रह जाएँगे। शिक्षक प्रशिक्षण की कमी भी मातृभाषा में प्रभावी शिक्षण के रास्ते में बाधा बनती है। कई शिक्षकों को मातृभाषा में पढ़ाने का उचित प्रशिक्षण नहीं मिला होता, जिससे विद्यार्थियों की शिक्षा की गुणवत्ता प्रभावित होती है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 यह सिफारिश करती है कि आदिवासी क्षेत्रों में जिन शिक्षकों को नियुक्त किया जाए, उन्हें वहाँ की स्थानीय भाषा सिखाई जानी चाहिए। शिक्षक को वहाँ की भाषा में शिक्षण कराने की स्वायत्तता देनी पड़ेगी। साथ ही, शैक्षिक संसाधनों की अनुपलब्धता इस चुनौती को और बढ़ा देती है। प्राथमिक स्तर पर बच्चों की भाषाओं को बिना सुधारे उसी तरह स्वीकार करना चाहिए जिस रूप में वे होती हैं। पाठ्यपुस्तकों और डिजिटल सामग्री की कमी के कारण मातृभाषा में शिक्षण प्रभावी रूप से लागू करना कठिन हो जाता है। वैश्वीकरण का प्रभाव भी मातृभाषा शिक्षण को चुनौती देता है, क्योंकि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अंग्रेजी की बढ़ती माँग के चलते अभिभावक और शिक्षक अंग्रेजी माध्यम को प्राथमिकता देने लगे हैं। इन सभी चुनौतियों के कारण, मातृभाषा को शिक्षण का माध्यम बनाना आसान नहीं है और इसके प्रभावी कार्यान्वयन के लिए लचीली नीतियों, पर्याप्त संसाधनों, शिक्षकों के प्रशिक्षण और अभिभावकों की मानसिकता में बदलाव की आवश्यकता है।

शिक्षकों हेतु निहितार्थ

अवधारणाओं के प्रति सही-समझ बनाने एवं समुचित संज्ञानात्मक विकास के संदर्भ, में औपचारिक शिक्षा के चरणों में मातृभाषा के उपयोग की स्वीकृति शिक्षक समुदाय में होनी आवश्यक है, क्योंकि उन्होंने ही कक्षा में मातृभाषा के लिए स्थान बनाना है। इसके लिए शिक्षकों को निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्यान देना होगा—

- अध्यापकों को यह स्वीकार करना होगा कि गणित एवं विज्ञान तथा इसी तरह के विषयों की अवधारणाओं को भी मातृभाषा के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है। आमतौर पर कुछ अध्यापक यह सोच रखते हैं कि कहानी, कविता, पर्यावरण अध्ययन ये सब तो मातृभाषा में करवाया जा सकता है, परंतु वे गणित व विज्ञान, भूगोल आदि की संक्रियाओं को समझाने के लिए मानक भाषा को ही प्राथमिकता देते हैं।
- बहुत से अध्यापक अभिभावकों की आकांक्षाओं के रहते कक्षा में मातृभाषा का प्रयोग नहीं करते। आमतौर पर अधिकांश अभिभावक शिकायत करते हैं कि हमारे बच्चों को बड़े लोगों वाली भाषा (उनका तात्पर्य पाठ्यपुस्तकों की भाषा से है) में बात की जाए और वही सिखाई जाए। दरअसल इस प्रकार की आकांक्षा रखने वाले अभिभावक मातृभाषा के महत्व से अवगत नहीं हैं। इसलिए अध्यापक अभिभावकों को अभिविन्यास कार्यक्रमों, शिक्षक-अभिभावक बैठकों के माध्यम से मातृभाषा के महत्व से परिचित करवा सकते हैं। उन्हें समझाया जा सकता है कि किस प्रकार मातृभाषा का प्रयोग बच्चों को कुशल सम्प्रेषक बना सकता है। अभिभावकों को मातृभाषा के महत्व से संबंधित पठन सामग्री भी वितरित का जा सकती है।
- अध्यापक क्षमता संवर्धन कार्यक्रमों, अत: सेवा प्रशिक्षण कार्यक्रमों एवं अन्य स्रोतों के माध्यम से स्वयं की मातृभाषा उपयोग के क्षेत्र में समझ बढ़ाएँ और अपनी शिक्षण युक्तियों में उनका प्रभावशाली प्रयोग करना सीखें।
- बच्चों के साथ अनौपचारिक व औपचारिक संवाद के माध्यम से उनके घर की भाषा या शब्दावली का लिखित स्वरूप कक्षा में प्रस्तुत किया जाए, क्योंकि अधिकांश बच्चों को भ्रम रहता है कि उनके द्वारा बोली जा रही भाषा को लिखा नहीं जा सकता।

सुझाव

- सभी कार्यालयों में मातृभाषा में कार्य करने का प्रोत्साहन मिलना चाहिए तथा मातृभाषा में रोजगार के अवसर बढ़ाने चाहिए।
- मातृभाषा में सभी निर्देशों व सूचनाओं को प्रसारित करना चाहिए जिससे मातृभाषा में पठन-पाठन गर्व की भावना से देखा जाना चाहिए।
- उच्च शिक्षा में, मातृभाषा में अध्ययन-अध्यापन सामग्री की उपलब्धता बढ़ानी चाहिए जिससे संक्रमण रुक सके।
- शैक्षिक नीतियों के क्रियान्वयन व निरीक्षण पर विशेष ध्यान देना चाहिए तथा शिक्षक-प्रशिक्षण में मातृभाषा माध्यम से पढ़ाने के लिए विशेष प्रशिक्षण देना चाहिए।
- मातृभाषा में पुस्तकें लिखने व अनुवाद करने को प्रोत्साहित करना चाहिए।
- अभिभावकों को जागरूक करना चाहिए कि शिक्षण माध्यम को सामाजिक प्रस्थिति से न जोड़ें, अपितु उसे बच्चे के अच्छे सामाजिक, मानसिक व सांस्कृतिक विकास से जोड़ कर देखें। जिससे समाज

में मातृभाषा के प्रति सम्मान व उत्कृष्ट दृष्टिकोण विकसित हो सके।

- शिक्षकों को कई भाषाओं में महारथ हासिल करने का प्रयास करना चाहिए जिससे बच्चों को उनकी मातृभाषा माध्यम से पढ़ाया जाना अधिक सहज हो।
- मातृभाषा में अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराने के लिए सभी राज्य सरकारों को विशेष विभागों का गठन करना चाहिए। जिससे शिक्षकों को मातृभाषा माध्यम से पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके।
- मातृभाषा माध्यम से पढ़ाने को लेकर अभिभावकों के दृष्टिकोण तथा शैक्षिक नीतियों में आने वाले अंतर पर विशेष शोध करके कारणों का पता लगाना चाहिए।

निष्कर्ष

प्राथमिक स्तर पर बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है कि विद्यालयों में विद्यार्थियों के घर की भाषा को स्थान दिया जाए। इससे विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक, भावनात्मक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक विकास पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। कक्षा का वातावरण इस तरह होना चाहिए जिसमें बच्चे अपने अनुभवों को निःसंकोच साझा कर पाएँ, घर की भाषा व विद्यालय की भाषा में संबंध देख पाए तथा सवाल कर पाए। यह प्रक्रिया बच्चों की अपनी भाषा/मातृभाषा के माध्यम से ही संभव है। भाषा केवल संप्रेषण का साधन ही नहीं है, बल्कि इसका संबंध बच्चों की अस्मिता व सामाजिक समता से भी है। बच्चे उसी परिवेश में सीखते हैं जहाँ वो महसूस करते हैं कि उनके घर, समुदाय, भाषा और संस्कृति आदि की अहमियत है। जो भाषा बच्चे जानते हैं उसमें पढ़ना, लिखना, बातों को समझना तथा स्वयं को अभिव्यक्त करना आसान हो जाता है। आज हमारी शिक्षा व्यवस्था मुख्यतः उपादेयता पर आधारित हो गई है। अर्थात इसका उद्देश्य ऐसे उपयोगी लोगों को तैयार करना हो गया है जो जीवनयापन कर सकें। इस स्थिति का सामना करने के लिए अपनी भाषा में शिक्षा पर बल देना होगा। रोजी-रोटी तो किसी दूसरी भाषा से हासिल की जा सकती है, परंतु समझ का आधार तो अपनी भाषा ही हो सकती है। यह शोध का विषय है कि हमने स्वतंत्रता के बाद कितने वैज्ञानिक, अर्थशास्त्री या समाजशास्त्री दिए। निश्चित ही इसका कारण शुरुआती दौर में समझ एवं शिक्षण का माध्यम अपनी भाषा का न होना है। अनेक शोध यह दर्शाते हैं कि मौलिक चिंतन के लिए मूल भाषा सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारक है। इसी तरह जिन्हें आदिवासी भाषाएँ कहा जाता है उसमें ज्ञान का एक वृहत भंडार था जो अब नष्ट हुआ और निरंतर नष्ट होता जा रहा है। इसे तभी संरक्षित किया जा सकता है जब कक्षा की अंत-क्रियाओं में सभी भाषाओं को स्थान व मान्यता मिले। विभिन्न शोधों ने यह बार-बार दर्शाया है कि भाषायी प्रवीणता, शैक्षिक उपलब्धि, संज्ञानात्मक लचीलापन, सामाजिक सहनशीलता तथा आत्मसम्मान इत्यादि का मातृभाषा से सीधा व महत्वपूर्ण संबंध है। बच्चों के विद्यालय में पढ़ाई जाने वाली मानक भाषा व घर की भाषा/मातृभाषा में अलगाव न केवल असमानता को बढ़ावा देता है, अपितु उनमें हीन भावना का भी जन्म होता है। इसलिए, जिनके विद्यालय में मातृभाषा माध्यम नहीं है, वे भाषा के साथ तालमेल नहीं बीठा पाते और धीरे-धीरे हाशिए की तरफ बढ़ते जाते हैं। शोध यह भी दर्शाते हैं कि एक भाषा में अर्जित

दक्षता, दूसरी भाषाओं के सीखने में बाधा नहीं, बल्कि सहायक होती है। अतः प्राथमिक स्तर पर समझ का माध्यम मातृभाषा रखने के लिए न केवल शिक्षकों, अभिभावकों तथा नीति-निर्माताओं की ही जिम्मेदारी समझनी चाहिए, अपितु यह समाज का साझा कर्तव्य होना चाहिए।

संदर्भ

अग्निहोत्री, आर.के. और ए.एल. खन्ना. 2016. *भाषा एवं भाषा शिक्षण* खंड-2 (सपांदित). वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली.

कमिंस, जे. 1981. स्कूलिंग एंड लैंग्वेज माइनॉरिटी स्टूडेंट्स : थियोरेटिकल फ्रेमवर्क, प्रोफेशनल कैसेट सर्विसेज, एवैल्यूएशन. डिसेमिनेशन एंड असेसमेंट सेंटर. कैलिफोर्निया स्टेट यूनिवर्सिटी. लॉस एंजेलेस.

कुमार, ज्ञानेन्द्र और राकेश कुमार. 2020. *भारतीय मनोविज्ञान का समसामयिक अध्ययन*. बुकमैन पब्लिकेशन, दिल्ली.

चॉम्स्की, एन. 1957. परिचय. *सिनटेक्टिक स्ट्रक्चर्स*. (पुनर्मुद्रण संस्करण 2002). पृ.सं. 13. मौनेट, न्यूयार्क.

छत्रिया, के. 1968. *मातृभाषा शिक्षण*. पृ.सं. 5. विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.

ट्रुजिलो, जे.एस. 2020. द यूज ऑफ मदर टंग इन इंस्ट्रक्शन— प्यूपिल्स परफॉर्मेंस अक्रॉस द ईयर्स. *ग्लोबस जर्नल ऑफ प्रोग्रेसिव एजुकेशन*. 10(1), पृ.सं. 59–67. https://www.academia.edu/download/76944233/Juliet-Trujillo-GPEJJ20.pdf

टैकी-ओफोसु, वी., एस. महामा, ई.एस.टी.डी. वैनडाइक, डी.के. कुमादोर और एन.ए.ए. टोकू. 2015. मदर टंग यूसेज इन घानाइयन प्री-स्कूल्स : परसेप्शंस ऑफ पेरेंट्स एंड टीचर्स. *जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड प्रैक्टिस*. 6(34), पृ.सं. 81. https://eric.ed.gov/?id=EJ1086075

निशांति, आर. 2020. अंडरस्टैंडिंग ऑफ द इम्पोर्टेंस ऑफ मदर टंग लर्निंग. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ट्रेंड इन साइंटिफिक रिसर्च एंड डेवलपमेंट*. 5(1), पृ.सं. 77. http://www.ijtsrd.com/papers/ijtsrd35846.pdf

निशांति, आर. 2020. अंडरस्टैंडिंग ऑफ द इम्पोर्टेंस ऑफ मदर टंग लर्निंग. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ट्रेंड इन साइंटिफिक रिसर्च एंड डेवलपमेंट*. 5(1), पृ.सं. 77–80. http://www.ijtsrd.com/papers/ijtsrd35846.pdf

पियाजे. जे. 1954. द *कंस्ट्रक्शन ऑफ रियलिटी इन द चाइल्ड*. पृ.सं. 357. बेसिक बुक्स, न्युयार्क.

बॉल, जे. 2011. एन्हांसिंग लर्निंग ऑफ चिल्ड्रन फ्रॉम डाइवर्स लैंग्वेज बैकग्राउंड्स— मदर टंग-बेस्ड बाइलिंग्वल और मल्टिलिंग्वल एजुकेशन इन द अर्ली इयर्स. यूनेस्को. https://unesdoc.unesco.org/ark:/48223/pf0000212270

मन्योनी, जे., बी. मबोरी और ई. ओकवाको. 2016. एटीट्यूड ऑफ टीचर्स टुवर्ड्स यूज ऑफ मदर टंग ऐज मीडियम ऑफ इंस्ट्रक्शन इन लोअर प्राइमरी स्कूल्स इन बुंगोमा साउथ सब-काउंटी, केन्या. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड रिसर्च*. 4(8), पृ.सं. 315–334. https://www.ijern.com/journal/2016/August-2016/24.pdf

मयो, टी. 2009. लिंग्विस्टिक डाइवर्सिटी एंड डेवलपमेंट— द लैंग्वेज क्वेश्चन एंड सोशल जस्टिस इन साउदर्न अफ्रीका. यूनिवर्सिटी ऑफ जुलूलैंड. क्वाजुलु-नटाल, साउथ अफ्रीका.

रा.शै.अ.प्र.प. 2005. *भारतीय भाषाओं का शिक्षण*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनसुंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

———. 2009. भारतीय भाषाओं का शिक्षण. *राष्ट्रीय फोकस समूह का आधारपत्र*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनसुंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

———. 2010. *समझ का माध्यम*. (पुनर्मुद्रण संस्करण जून-2021). राष्ट्रीय शैक्षिक अनसुंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

वायगोत्स्की, एल.एस. 1978. माइंड इन सोसाइटी : द डेवलपमेंट ऑफ हायर साइकोलॉजिकल प्रोसेसज. हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस. https://www.google.co.in/books/edition/Mind_in_Society/RxjjUefze_oC?hl=en&gbpv=0

वूलार्ड, के. 1998. इंट्रोडक्शन : लैंग्वेज आइडियोलॉजी ऐज अ फील्ड ऑफ इन्क्वायरी. बी. शीफेलिन, के. वूलार्ड और पी. क्रॉस्क्रिटी (संपादक). *लैंग्वेज आइडियोलॉजीज : प्रैक्टिस एंड थ्योरी*. (पृ.सं. 3–50). ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस. https://academic.oup.com/book/48343/chapter-abstract/421384126?redirectedFrom=fulltext

शाह, पी.के. 2017. गांधीजीज व्यूज ऑन बेसिक एजुकेशन एंड इट्स रिलिवेंस. *पुणे रिसर्च— एन इंटरनेशनल जर्नल इन इंग्लिश*. 3(4).

शिक्षा मंत्रालय. 1966. *रिपोर्ट ऑफ द एजुकेशन कमीशन 1964 – 66*— एजुकेशन एंड नेशनल डेवलपमेंट. भारत सरकार, नई दिल्ली. https://ia801307.us.archive.org/16/items/ReportOfTheEducationCommission1964-66D.S.KothariReport/48.Jp-ReportOfTheEducationCommission1964-66d.s.kothari.pdf

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. शिक्षा मंत्रालय. भारत सरकार, नई दिल्ली.

स्कूटनैब-कैंगास, टी. 1984. बाइलिंग्वलिज्म और नॉट : द एजुकेशन ऑफ माइनॉरिटीज. एजुकेशनल मैटर्स, क्लीवडन.

सिन्हा, बी.के. 1939. द वर्धा एजुकेशन स्कीम. *जर्नल ऑफ द रॉयल सोसाइटी ऑफ आर्ट्स*. 87(4514), पृ.सं. 729. http://www.jstor.org/stable/41359351